श्रीगणेशचतुर्थी

(भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी)

श्रीमती प्रतिभा गर्ग
जोधपुर

गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को मध्याह्न के समय विघ्नविनायक भगवान् गणेश का जन्म हुआ था। अतः यह तिथि मध्यान्हव्यापिनी लेनी चाहिये। इस दिन रविवार अथवा मंगलवार हो तो प्रशस्त है। गणेशजी हिन्दुओं के प्रथम पूज्य देवता हैं। सनातन धर्मानुयायी स्मार्तों के पञ्चदेवताओं में गणेश जी प्रमुख हैं। हिन्दुओं के घर में चाहे जैसी पूजा या क्रियाकर्म हो, सर्वप्रथम श्रीगणेशजी का आवाहन और पूजन किया जाता है। शुभ कार्यों में गणेश की स्तुति का अत्यन्त महत्त्व माना गया है। गणेश जी विघ्नों को दूर करने वाले देवता हैं। इनका मुख हाथी का, उदर लम्बा तथा शेष शरीर मनुष्य के समान है। मोदक इन्हें विशेष प्रिय है। बंगाल की दुर्गापूजा की तरह महाराष्ट्र में गणेश पूजा एक राष्ट्रिय पर्व के रूप में प्रतिष्ठित है।

गणेशचतुर्थी के दिन नक्तव्रत का विधान है। अतः भोजन सायंकाल करना चाहिये तथापि पूजा यथासम्भव मध्यान्ह में ही करनी चाहिये, क्योंकि-

पूजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्नव्यापिनी तिथिः।

अर्थात् सभी पूजा-व्रतों में मध्याह्नव्यापिनी तिथि लेनी चाहिये।

भाद्रपद शुक्लपक्ष को चतुर्थी तिथि को प्रातःकाल स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर अपनी शक्ति के अनुसार सोने, चाँदी, ताँबे, मिट्टी, पीतल अथवा गोबर से गणेश की प्रतिमा बनाये या बनी हुई प्रतिमा का पुराणों में वर्णित गणेशजी के गजानन, लम्बोदरस्वरूप का ध्यान करे और अक्षत- पुष्प लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य दक्षिणायने सूर्ये वर्षर्तौ भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे गणेशचतुर्थ्यां तिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्मा / वर्मा / गुप्तोऽहं विद्याऽऽरोग्यपुत्रधनप्राप्तिपूर्वकं सपरिवारस्य मम सर्वसंकट निवारणार्थं श्रीगणपतिप्रसादसिद्धये चतुर्थीव्रताङ्गत्वेन श्रीगणपतिदेवस्य यथालब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये।

हाथ में लिये हुए अक्षत-पुष्प इत्यादि गणेशजी के पास छोड़ दे।

इसके बाद विघ्नेश्वर का यथाविधि 'ॐ गं गणपतये नमः' से पूजन कर दक्षिणा के पश्चात् आरती कर गणेशजी को नमस्कार करे एवं गणेशजी की मूर्ति पर सिन्दूर चढ़ायें। मोदक और दूर्वा की इस पूजा में विशेषता है। अतः पूजा के अवसर पर इक्कीस दूर्वा दल भी रखे तथा उनमें से दो-दो दूर्वा निम्नलिखित दस नाममन्त्रों से क्रमशः चढ़ायें -

१- ॐ गणाधिपाय नमः **२- ॐ उमापुत्राय नमः** **३- ॐ विघ्ननाशनाय नमः**
४- ॐ विनायकाय नमः **५- ॐ ईशपुत्राय नमः** **६- ॐ सर्वसिद्धिप्रदाय नमः**
७- ॐ एकदन्ताय नमः **८- ॐ इभवक्त्राय नमः** **९- ॐ मूषकवाहनाय नमः**
१०- ॐ कुमारगुरवे नमः

पश्चात् दसों नामों का एक साथ उच्चारण कर अवशिष्ट एक दूब चढ़ाये। इसी प्रकार इक्कीस लड्डू भी गणेशपूजा में आवश्यक होते हैं। इक्कीस लड्डू का भोग रखकर पाँच लड्डू मूर्ति के पास चढ़ाये और पाँच ब्राह्मण को दे दे एवं शेष को प्रसादस्वरूप में स्वयं ले ले तथा परिवार के लोगों में बाँट दे।

पूजन की यह विधि चतुर्थी के मध्याह्न में करे। ब्राह्मणभोजन कराकर दक्षिणा दें और स्वयं भोजन करें। पूजन के पश्चात् नीचे लिखे मन्त्र से वह सब सामग्री ब्राह्मण को निवेदन करे-

दानेनानेन देवेश प्रीतो भव गणेश्वर।
सर्वत्र सर्वदा देव निर्विघ्नं कुरु सर्वदा ।
मानोन्नतिं च राज्यं च पुत्रपौत्रान् प्रदेहि मे ॥

इस व्रत से मनोवाञ्छित कार्य सिद्ध होते हैं; क्योंकिविघ्नहर गणेशजी के प्रसन्न होने पर क्या दुर्लभ है ? गणेशजी कायह पूजन बुद्धि, विद्या तथा ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति एवं विघ्नों के नाश के लिये किया जाता है। कई व्यक्ति श्रीगणेश सहस्त्रनामावली के एक हजार नामों से प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ लड्डू अथवा दूर्वादल आदि श्रीगणेशजी को अर्पित करते हैं। इसे गणपतिसहस्त्रार्चन कहा जाता है।